सानिया-भूपति

पहला ग्रैण्ड स्लैम
ऑस्ट्रेलियाई ओपन में भारत

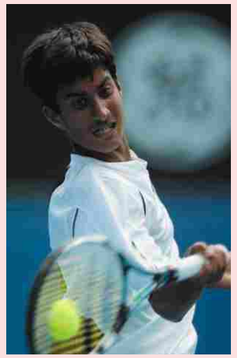
जूनियर विजेताःयुकी भाम्बरी

अगर तुम भी इस अभियान से जुड़ना चाहते हो तो 9820149022 नम्बर पर हेमन्त छाबरा से सम्पर्क किया जा सकता है। इनका ई-मेल है thebicycleproject@gmail.com

आई ... साइकिल !

हर सुबह सवर्णा मराठा (12 साल) और कविता कक्कड़ (14 साल) अपनी साइकिल में पैडल मारती हुई चल देती हैं – स्कूल की ओर। गपशप और गाना-वाना गाते आधे घण्टे में वे अपने स्कूल में होती हैं। यह स्कूल है मुम्बई से कोई 120 किलोमीटर दूर विक्रमगढ़ तहसील में अलोंद गाँव का गर्दे सज्जन विद्यालय। शाम को अपने गाँव काकड़पाड़ा पहुँचकर वे फटाफट अपना होमवर्क कर लेती हैं। फिर भी समय बचता है उनके पास कबड्डी या खो खो खेलने का। लेकिन कुछ समय पहले जब उनके पास साइकिल नहीं थी तब स्थितियाँ बहुत अलग थीं। 8 किलोमीटर दूर स्थित स्कूल जाने के लिए उन्हें लगभग 1 घण्टा सुबह-शाम चलना पड़ता था। थकी टाँगें, थका शरीर न तो पढ़ने देता और न खेलने।

आना साइकिल का

"वो बरसात की सुबह थी। साढ़े छह बजे थे। मैं बस से अपने फॉर्म हाउस जा रहा था। अचानक मुझे बरसते पानी में स्कूल जाते बच्चे दिखे। वे एक लाइन में पैदल जा रहे थे। मुझे याद आया 80 साल पहले मेरे पिताजी भी मीलों पैदल चलकर स्कूल जाते थे। और आज भी बच्चों को इसी तरह जाना पड़ रहा है। मुझे बहुत बुरा लगा।" यह कहना है हेमन्त छाबरा का।

"उसी दिन हेमन्त छाबरा ने सोच लिया कि वो इन बच्चों के लिए कुछ करेंगे। मैंने अपने बेटे की और कुछ दोस्तों के घर से साइकिलें इकट्ठा कीं। ये साइकिलें अब उनके काम की नहीं रही थीं। मेरी पत्नी संगीता और दोस्त सिमोना टेररॉन भी इसमें जुट गईं। हमने इस प्रोजेक्ट को नाम दिया - *द बाइसिकल प्रोजेक्ट*। बात फैलती गई। हमने लोगों को अपनी पुरानी साइकिलें दान देने को प्रेरित किया।"

हमने अलोंद स्कूल के बच्चों की सूची बनाई जिन्हें रोज़ 5 किलोमीटर से ज़्यादा चलना पड़ता था, जो स्कूल नियमित आते थे और जिन्हें पढ़ाई का शौक था। तय हुआ कि 26 जनवरी को साइकिलें बाँटी जाएँगी। मैंने काम से महीने भर की छुट्टी ले ली। ऊँची बिल्डिंगों से साइकिलें उतारना, साफ करना, उन्हें एक जगह पहुँचाना, उनकी मरम्मत करवाना, लोगों से फॉर्म भरवाना, पुलिस तक उस जानकारी को पहुँचाना...। कभी-कभी मैं हिम्मत हार जाता। पर हिम्मत बँधाने वाले भी बहुत थे। बड़े अनुभव हुए। एक महिला जिसके पति और बेटे की मौत सड़क दुर्घटना में हो गई थी, ने हमें अपने बेटे की साइकिल दी। जिनके पास साइकिलें नहीं थीं उन्होंने अपना समय दिया। 26 जनवरी तक 68 साइकिलें जमा हो गई थीं।"

वो 26 जनवरी...

न भाषण हुआ, न हो-हल्ला। वहाँ बच्चे थे, साइकिलें थीं और हम थे। रेणुका निम्बले को मुम्बई की विनीता की साइकिल मिली थी। उस पर लाल रिबन से बँधा एक सन्देश था – *गाँव के उन बच्चों के लिए जिन्हें मेरी साइकिल मिलेगी। मज़े से चलाओ..।*

जवाब में रेणुका ने भी एक सन्देश भेजा।

"यह तो पहला कदम था। अलोंद के ही 69 बच्चों को अब भी साइकिलों का इन्तज़ार है। और अभी तो कितने ही गाँव बचे हैं।" कहना है हेमन्त छाबरा का।

– 9 फरवरी 2009, हिन्दुस्तान टाइम्स

आँखन देखी...

जोशुआ वो पहला दिन याद करते हैं जब घाना (अफ्रीका) के एक दर्ज़ी को उन्होंने देखने में मदद की। नज़र कमज़ोर हो जाने के कारण उसके लिए अब सुई में धागा डालना मुश्किल हो गया था। पैसों की कमी उसे चश्मे के बारे में सोचने भी नहीं दे ती थी। जोशुआ के चश्मे से उसकी धुँधली ज़िन्दगी में चमक आ गई है। इसके बाद लगभग तीस हज़ार लोगों की ज़िन्दगी में रोशनी भर चुके हैं जोशुआ। उनकी इच्छा एक करोड़ लोगों तक इन खास चश्मों को पहुँचाना है।

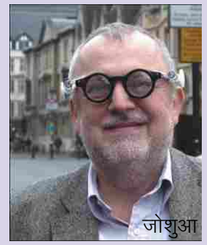
जोशुआ

जोशुआ का कहना है कि अमीर देशों में 60 से 70 प्रतिशत लोग नज़र का चश्मा पहनते हैं जब क गरीब देशों में केवल 5 प्रतिशत लोगों को ही यह नसीब होता है। चश्मे की कीमत उनकी महीने भर की कमाई से भी ज़्यादा हो सकती है। नतीजा यह कि कितने ही बच्चे हैं जिन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिखा साफ नज़र नहीं आता, बस ड्राइवर, शिक्षक, मछुआरों को कमज़ोर नज़र से गुज़ारा करना पड़ता है। गाँवों में रहने वालों की हालत तो और भी खराब है।

जोशुआ के चश्मे की खासियत यह है कि इस्तेमाल करने वाला अपनी आँख की रोशनी के हिसाब से उसमें हेरफेर कर सकता है। इस चश्मे में पतली-सी एक थैली होती है जिसमें तरल भरा जाता है। ज़्यादा कमज़ोर नज़र वालों को ज़्यादा तरल भरना होता है। कुछ-कुछ वैसा ही जैसा पूरी के साथ होता है। कम कमज़ोर नज़र वालों की थैली चपटी और ज़्यादा कमज़ोर नज़र वालों की थैली ज़्यादा फूली हुई होती है। चश्मे के साथ प्लास्टिक की सिरिंज भी दी जाती है जिसमें सिलिकॉन तेल होता है। लोग अपनी आँख की ज़रूरत के हिसाब से थैली में तेल भरते हैं।

सिल्वर का कहना है कि एक चश्मे का खर्च 19 डॉलर पड़ता है जिसे वे कम करके 2-4 डॉलर लाने पर काम कर रहे हैं।

(62 साल के जोशुआ सिल्वर एक आण्विक भौतिकशास्त्री हैं।)

– 18 जनवरी 2009, द सनडे एक्सप्रेस

सिरिंज से थैली में सिलिकॉन तेल भरा जाना।

वाह... उस्ताद, वाह

जाने-माने तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन को उनके ग्लोबल ड्रम प्रोजेक्ट के लिए ग्रैमी अवॉर्ड मिला है। ज़ाकिर ने मिकी हार्ट, नाइजीरिया के सिकिरु एडिपोजू और पोर्टो के जैज़ संगीतकार जिओवनी हिडाल्गो के साथ मिलकर इस एलबम को तैयार किया है। 1991 में प्लेनेट ड्रम के बाद हुसैन और हार्ट का यह दूसरा संयुक्त एलबम है।

– 10 फरवरी, 2009, राजस्थान पत्रिका